ISSN-2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS

Original Research Article

अनुवाद की व्याप्ति और महत्व

*डॉ. सचिन संपत जगताप,

* सहाय्यक प्राध्यापक, सर परशुरामभाऊ महाविद्यालय, पुणे

वर्तमान युग को अनुवाद का युग कहा जा सकता है। दिन प्रतिदिन विश्व में अनुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है जैसे-जैसे विश्व की विभिन्न भाषाओं का साहित्य समृद्ध होता जाएगा अनुवाद का महत्व बढ़ता जाएगा। प्राचीन युग में मुख्य रूप से साहित्य, दर्शन और धर्म आदि रचनाओं का ही अनुवाद किया जाता था क्योंकि इन तीनों क्षेत्रों में ही प्राय ग्रंथो की रचना होती थी। वर्तमान युग में अनुवाद का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। डॉ गोरख कहते है – "अनुवाद की चर्चा जब भी होती है हमेशा साहित्यिक अनुवाद की बात की जाती है, परंतु साहित्य के अलावा भी जीवन के ऐसे अनेक क्षेत्र है, जहां अनुवाद की आवश्यकता अधिक है। क्योंकि नया ज्ञान अपनी या दूसरी भाषा में लाने ले- जाने का काम प्राय अनुवाद ही करते हैं। इन अनुवादों की प्रेरणा व्यवहारिक उपयोगिता होती है, इसलिए व्यावहारिक अनुवाद कहते हैं। यह अनुवादक व्यावहारिक जगत से संबंध होते हैं। अतः मुख्यतः ज्ञानपरक तथा सूचनापरक होते हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों के विकास के साथ अनुवाद के क्षेत्र भी विकसित हो रहे हैं। यह सभी क्षेत्र व्यावहारिक अनुवाद के अंतर्गत आते हैं।"[1] जिसमें साहित्य, दर्शन और धर्म के अतिरिक्त विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, प्रशासन, कूटनीति, कानून, जनसंचार माध्यम, विधि, प्रौद्योगिकी आदि अनेक क्षेत्रों के ग्रंथों और रचनाओं का अनुवाद हो रहा है। अनुवाद के संदर्भ में रीता रानी पालीवाल कहती है- "मानव के पास आयु, समय और समाधान की एक सीमा रहती है, हर व्यक्ति संसार की प्रत्येक भाषा नहीं सीख सकता। ऐसी स्थिति में अनुवाद ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम सभी भाषाओं से संपर्क स्थापित कर सकते हैं।"[2]

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

वर्तमान युग में अनुवाद सर्वाधिक चर्चित मुद्दा रहा है। आज संपूर्ण विश्व को एक सूत्रता में बांधने तथा मानव जाति को एक दूसरे के निकट लाने में और मानव जीवन को सुखी और संपन्न बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान स्थिति शायद थी ऐसा कोई क्षेत्र हो जाए जहां अनुवाद की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। अनुवाद के माध्यम से हम केवल भारतीय भाषाओं में उपलब्ध साहित्य से ही परिचित नहीं होंगे बल्कि विश्व साहित्य की परिकल्पना से भी परिचित होंगे। अनुवाद चिंतक डॉ. जी गोपीनाथ अनुवाद के संबंध में लिखते हैं – "भारत जैसे बहुभाषा- भाषी देश में अनुवाद की

ISSN-2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS
Original Research Article

उपादेयता स्वयं सिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र अचूक साधन है । इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकने वाली भौगोलिक और भाषण दीवारों को हटाकर विश्व मैत्री को और भी सुदृढ़ बना सकते हैं ।" [3]

अनुवाद का सबसे बड़ा क्षेत्र बातचीत का है। विश्व में सबसे अधिक मात्रा में बातचीत का ही अनुवाद किया जाता है। आज हर मनुष्य मातृभाषा में ही बोलता है। लेकिन जब दो अलग-अलग भाषा-भाषाई एक दूसरे से मिलते हैं तो उनके पास अनुाद के बिना दूसरा कोई साधन नहीं है जिसके द्वारा ये एक दूसरे से संपर्क स्थापित कर सके।

बातचीत के क्षेत्र के बाद अनुवाद की व्याप्ति पत्राचार के क्षेत्र में अधिक मात्रा में दिखाई देती है। यह पत्राचार विविध स्तरों पर होता है जैसे - व्यापार प्रशासन, न्यायालय, बैंक, शोधकार्य आदि सभी क्षेत्रों में पत्राचार का महत्व अनन्यसाधारण है।

भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कार्यालयों में हमेशा अनुवादकों की आवश्यकता होती है। क्योंकि यह कंपनियाँ अपनी ही भाषा में पत्रव्यवहार करना पसंद करती है। ब्रिटन, फ्रेंच, जर्मनी, चीन आदि जैसे देशों में तो उनकी भाषा में ही पत्रव्यवहार होता है। ऐसी स्थिति में अनुवाद की नितांत आवश्यकता है।

अनुवाद की अनिवार्य आवश्यकता का क्षेत्र विधि और न्याय का है। भारत जैसे संघराज्य में आज भी उच्च तथा उच्चतम अदालतों की भाषा प्रायः अंग्रेजी होती है। हमारे यहाँ के कानून भी अंग्रेजी भाषा में बनाए लिखे, छपे तथा सुने एवं सुनाएँ जाते हैं। कागजात प्रादेशिक भाषा में पैरवी अंग्रेजी में और निर्णय भी अंग्रेजी में ऐसी स्थिति में अनुवाद के बिना काम नहीं चल सकता।

वर्तमान युग में तो शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की बहुत बड़ी माँग है। वर्तमान युग में शिक्षा का महत्व व्यापक मात्रा में बढ़ चुका है। शिक्षा के सभी क्षेत्रों में जैसे-विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान, इतिहास, साहित्य आदि ऐसे कई विषय पढे और पढ़ाएँ जाते हैं। उनका अनुवाद किए बिना ज्ञान की वृद्धि संभव नहीं है।

आज विज्ञान, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति हुई है। विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर शोध, अध्ययन और लेखन हो रहा है। और इसी कारण विकसित देशों की प्रगति में सर्वाधिक योगदान विज्ञान तथा प्रौद्योगिक का रहा है। अमरिका, जापान, चीन, रशिया, फ्रान्स, जर्मनी, इंग्लड आदि जैसे अनेक देश विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति कर चुके है। भारत जैसा विकसनशील देश अपनी प्रगति के लिए विकसित देशों से वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक ज्ञान चाहता है। आज हमारे पास इन विकसित देशों की वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक से संबंधित नई-नई उपलब्धियों एवं विकास की जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुवाद की अत्यंत आवश्यकता है। वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में हमें सतर्क रहना चाहिए। संचार माध्यमों में अनुवाद का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है । संचार के महत्वपूर्ण माध्यमों में समाचार – पत्र रेडियो और दूरदर्शन है ।आज समाचार माध्यम सेविश्व नजदीक आ रहा है। समाचार पत्रों के पास जो समाचार, सरकारी सूचना न्यूज, एजंसिज प्रादेशिक संवादाताओं के द्वारा आते हैं उनमें प्रादेशिक भाषा के समाचार अगर छोड़ दे तो शेष

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सारी सामग्री अन्य भाषा से अनूदित करनी पड़ती है। फिल्म संचार का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। एक भाषा में लोकप्रियता प्राप्त की हुई फिल्म कितनी भी मनोरंजक क्यों न हो, उस भाषा से अनजान लोग उसका आनंद नहीं ले सकते ऐसी स्थिति में अनुवाद ही अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अनुवाद सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। धर्म दर्शन, साहित्य, शिक्षा विज्ञान, व्यवसाय, राजनीति जैसे संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध है। आज विश्व संस्कृति के निर्माण के लिए विभिन्न संस्कृतियों में आदान-प्रदान आवश्यक है और यह कार्य केवल अनुवाद से ही संभव है। वर्तमान युग में पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति की ओर झुक गई है। अत यह इसी बात का प्रमाण है कि आज अनुवाद के द्वारा ही विश्व साहित्य का निर्माण हो रहा है।

आज केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य है। राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 एवं राष्ट्रपति के आदेश तथा राजभाषा विभाग यह मंत्रालय के दिशा निर्देशों के अनुसार प्रशासनिक कार्य, प्रशासकिय प्रक्रिया, साहित्य, मुद्रण, लेखन, पत्राचार, रबर मोहरें, साईनबोर्ड जैसी मदें द्विभाषिक होने के कारण अनुवाद का महत्व बढ़ गया है।

तुलनात्मक अध्ययन में अनुवाद की नितांत आवश्यकता है। अगर हमें किसी भी क्षेत्र में किन्हीं दो देशों या दो प्रातों के किसी विषय अथवा सामाजिक, राजकीय, साहित्यिक, आर्थिक, धार्मिक विषय का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते है तो अनुवाद का ही सहारा लेना पड़ता है।

विश्व में शांति बनाएँ रखने हेतु अंतर्राष्ट्रीय संबंध के क्षेत्र में अनुवाद की नितांत आवश्यकता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में विशेष रूप से अगर देखा जाए तो मौखिक अनुवाद व्यापक मात्रा में होता है। किसी भी अंतर्राष्ट्रीय सभा, सम्मेलन अथवा परिषदों में अनुवाद की सहायता लेना आवश्यक बन जाता है।

निष्कर्ष: कह कर सकते हैं कि जिस प्रकार किसी देश की अंतर्गत प्रगति के लिए अनुवाद की आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार पूरे मानव समाज की प्रगति के लिए भी वह अनिवार्य है अतः विश्व में संभवत: एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां अनुवाद एक वरदान के रूप में विद्यमान नहीं है। अंत में यह कहना अतिशयोक्ति न होगा होगी कि अनुवाद में सिर्फ शब्दों का अनुवाद नहीं होता दो संस्कृतियों का अनुवाद होता है l आपस में मिलन के कारण नई संस्कृति का निर्माण होता है। अनुवाद की आवश्यकता और व्याप्ति हर जगह उपस्थित है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. *अनुवाद तंत्र आणि आव्हाने- संपा. डॉ गोरख थोरात – पृ. क्र. 24*
2. *अनुवाद निरूपण - डॉ . भारती गोरे पृ. क्र. 37*
3. *www.hindinest.com 'अनुवाद हमें राष्ट्रीय ही नहीं अंतरराष्ट्रीय बनता है।' शिबन कृष्ण रैना, अगस्त 15, 2026*

Cite This Article: *डॉ. जगताप स. सं. (2025) अनुवाद की व्याप्ति और महत्व* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 231–233).